International Journal of Sanskrit Research
अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 307-312

www.anantaajournal.com
Received: 29-06-2020
Accepted: 16-08-2020

डॉ० रूपेन्द्र कुमार
सहायक आचार्य, श्री साहब सिंह महाविद्यालय (सम्बद्ध) डॉ भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा, उत्तर प्रदेश भारत |

Corresponding Author:
डॉ० रूपेन्द्र कुमार
सहायक आचार्य, श्री साहब सिंह महाविद्यालय (सम्बद्ध) डॉ भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा, उत्तर प्रदेश भारत।

व्यक्तिविशेष कृत संवाद सूक्त ऋग्वेद के संदर्भ में

रूपेन्द्र कुमार

प्रस्तावना

क–विश्वामित्र नदी संवाद (ऋ0 3.33)

ऋग्वेद में वर्णित वि वामित्र नदी संवाद सूक्त की व्याख्या निरुक्त में की गयी है । व्याख्या से पूर्व आचार्य यास्क ने 'तत्रेतिहासमाचक्षते' कहकर लिखा है । कि वि वामित्र धन लेकर विपाट् तथा भातुद्री के संगमस्थल पर आया वहाँ उसने नदियों की स्तुति की कि तुम कम जल वाली हो जाओ [1] । इसी आधार पर यह कल्पना की जाती है कि वि वामित्र ने वस्तुतः ऐसा किया होगा जिससे नदियों ने उसकी प्रार्थना को सुनकर उसे रास्ता दे दिया होगा । परन्तु निरुक्त में चर्चित वेदमूलक आख्यान पर थोड़ा सा भी विचार किया जाय तो यह उक्त कथन सत्य प्रतीत नहीं होता क्योंकि नदियाँ जड़ हैं वे न तो किसी की वात सुन सकती न ही उत्तर दे सकती है । अर्थात नदियों में बोलने तथा सुनने की भाक्ति नहीं है ।

अतःसंवाद के माध्यम से यह कहा जा सकता है कि ऋ0 3/33 के आधार पर सूक्त की
दो प्रकार की व्याख्या की जा सकती है [2]। आदिदैविकपक्षीय तथा आधिभौतिकपक्षीय

आधिदैविक पक्ष – मं0 6 में कहा गया है कि वज्रवाहु इन्द्र ने नदियों को बनाया है [3]। तथा इस पक्ष में सूर्य को ही इन्द्र माना गया है [4] तथा वि वामित्र भी माना गया है । इस सूक्त के ऋशि विश्वामित्र ही हैं । '' विश्वामित्रः सर्वमित्रो भगवान आदित्यः।

आकश में आदित्य की इन नदियों को बनाता है । आदित्य के कारण ही बर्शा होती है । वही वज्र अर्थात अपनी किरणों से मेघ पर प्रहार करके जल धाराओं को नीचे गिराता है ।ऋग्वेद 10/75 में गंबा आदि नदीवाचक नामों का विवरण दिया गया है । जो नदियों को बहने का आश्रय दे तथा उन्हें गति दे फैलाए वही सिन्धुक्षित प्रेममेध कहलाता है । इस सूक्त में ऋशि सिन्धुक्षित प्रेयमेध हैं ।

विश्वामित्र पिजवन के पुत्र पैजवन अर्थात् सुदास का पुरोहित था । सुदास का निर्वचन आचार्य यास्क ने ''सुदाः कल्याणदानः'' के रूप में किया है । इस पक्ष में वायु ही सुदास है । आचार्य यास्क लिखते हैं । स्पर्धनीय वेगवाले को अथवा मिश्रीभाव गतिवाले को पिजवन कहते हैं [5]।

यास्काचार्य ने विपाट भातुद्री से पूर्व द्यावा – पृथिवी की व्याख्या की है । इसका यही अभिप्राय है कि विपाट तथा भातुद्री का द्युलोक तथा प्रथिवीलोक दोनों से सम्बन्ध है ।

रमध्वं मे वचसे सौम्यां ऋतावरी रूप मूहूर्त्तमेवैः।
प्र सिन्धुमच्छा वृहती मनीशाऽवस्युरह्वे कुशिकस्थ सूनुः।। (ऋ0 3/33/5)

उपर्युक्त मन्त्र में सोम्याय पद वि वामित्र का विशेशण है । तथा इस मंत्र में नदी को ऋतावरी कहा गया है।'ऋत' [6] अर्थात जलवाली जल से ही अन्न की उत्पत्ति होती है । यह तथ्य सुविदित है । इस मन्त्र में वि वामित्र को कुशिक का सूनु कहा गया है [7]। किन्तु ऐतिहासिक वि वामित्र कुशिक का पुत्र नहीं अपितु पौत्र है । वह गाधि का पुत्र है । ऐसा भाश्यकार पतंजलि मानते हैं [8] ।

आधिभौतिक पक्ष – इस पक्षमेंराजा ही पिजवन है। क्योंकि इसका वेग अर्थात राश्ट्ररक्षणरूपी गति स्पर्शा के योग्य है । विश्वामित्र इसका पुरोहित है । पुर एनं दधति । राश्ट्र के सभी कार्यों में राजा इसे आगे रखता है । प्रमुखता देता है । सर्व विदित है कि वर्शाकाल में नदियाँ बाढ के द्वारा विनाश कार्य भी करती है । जिससे आवागमन में मार्ग भी अवरुद्ध हो जाते हैं । राजा का कर्तव्य है कि कुशल इंजीनियरों के द्वारा पुल आदि का निर्माण करा कर नदियों के विनाशक रूप पर काबू पाया करें।

इस प्रकार के कार्य अति व्ययसाध्य होते हैं। इसलिए विश्वामित्र अपने साथ धन लेकर ही जाता है । जड़ नदी के लिए धन ले जाने का अन्य कोई अर्थ नहीं हो सकता । मन्त्रों में विश्वामित्र को कारु भी कहा गया है । जिसका अर्थ है । शिल्पी । ऐसा शिल्पी या इंजीनियर जो अपनी विद्या के बल पर उफनती हुई नदियों को वश में कर लेता है । बडे–बडे वाँध या पुल आदि बनाकर वह इनके विना ाक रूप को समाप्त करके आवागमन को भी सुगम वना देता है । इस अवस्था में वे नदियाँ स्वसा के सदृश हितकारिणी हो जाती हैं ।13 वें मन्त्र में कहा गया है । कि विश्वामित्र की प्रार्थना पर नदियों ने अपने आपको रस्सियों से वाँध दिया था । तथा लहरों को मानो खूँटे से वाँध दिया था । वि वामित्र कहता है कि तुम पुनः पूर्ववत वेग से वहने लगो [9] ग्रिफिथ ने भी 12वें मन्त्र का यही अर्थ किया है । स्कन्दस्वामी ने आधिदैविक व्याख्या करते हुए भाव पृकट किया है । कि नित्यपक्ष में सूर्य ही वि वामित्र है। ऐसा अर्थ व्यक्त किया है।यास्काचार्य ने वि वामित्र को सर्वमित्र (नि0 2/24) कहा है । यह आदित्यपक्ष का ही पोशक है ।

स्वामी दयानन्द ने सूक्त की तीन ऋचाओं से नदीं की उपमा देकर अध्यापिका के कर्तव्यों का वोध कराया है । इस पक्ष में उन्होंने विपाट का अर्थ या विविधं पटति गच्छति वा सा तथा भातुद्री का अर्थ भा भीघ्र तुदति व्यथयति सा किया है । अर्थात विविध ज्ञान को प्राप्त करने वाली तथा बुराइयों को दूर करने वाली अध्यापिका विपाट् तथा विद्योन्नति के लिए श्राव करने वाली अध्यापिका भातुद्री है ।

ख – सरमा – पाणि संवाद

ऋग्वेद दशम मण्डल का 108 वॉ सूक्त एक सुन्दर संकेत रूपक है । इसमें सरमा देव ाुनी और असुर पणियों का वर्णन है । इस सूक्त का देवता और ऋशि सरमा और पणि है । यह सूक्त 11 ऋचाओं में विभक्त है जिसका स्वर धैवत तथा छन्द त्रिश्टुप है ।

यास्काचार्य ने सरमा भाब्द की व्याख्या में इस सूक्त के प्रथम मन्त्र को प्रस्तुत करते हुए लिखा है, कि – 'इन्द्र से भेजी हुई देव ाुनी सरमा ने असुर पाणियों से संवाद किया – यह आख्यान है [10]।

सायणाचार्य ने इस सूक्त का भाश्य करते हुए ब्राह्मण ग्रन्थों के आधार पर लिखा है। असुर पणि लोग देवों की गौएँ चुरा कर ले गये और किसी सुदूरवर्ती गुप्त स्थान पर छिपाकर उन्हें रख छोड़ा । इन्द्र ने सरमा नाम की देवों की भाुनी से कहा कि तू वहॉ जाकर उन गौओं का पता ले कि वे कहाँ हैं ।

सरमा ने उत्तर दिया कि यदि मेरी सन्तान को उन गौओं का दुग्ध आदि दोगे तो मैं जाऊँगी । इन्द्र ने सरमा की इस भार्त को स्वीकार कर लिया । ततप चाद् सरमा नदी को पार करके उन चोर पणियों के पास पहुँची और गौओं का पता लिया । गौओं का पता इन्द्र को मिलने पर इन्द्र ने उन असुर बनियों को दण्डित किया और गौएँ छीन लीं। इस प्रकार प्रस्तुत सूक्त में पणियों और सरमा का वार्तालाप है ।पणि लोग सरमा से पूछते हैं–

किमच्छन्ती सरमा प्रेदमानऽदूरे ह्यध्वा जगुरिः पराचैः ।
कास्मेहितिः का परितक्म्यासीत्कथं रसाया अतरः पयांसि ।।(ऋ0 10/108/1)

1. कि हे – सरमा हम लोग बहुत दूर आकर छिपे हुए हैं– यहॉ आने का मार्ग बहुत लम्बा है । तू यहाँ कैसे आ पहुँची ।

ये पणि लोग नदियों को पार कर पर्वत आदि दुर्गम प्रदे ों में भी छिप जाते हैं । बीहड़ वनों में वीरपप्पन के समान छिप जाते हैं । वहाँ पहुँचना सबके वश में नहीं है ।

2. इन्द्रस्य दूतीरिशिता चरामि मह इच्छन्ती पणयो निधीन्वः।
अतिश्कदो भियसा तन्न आवत्तथा रसाया अतरं पयांसि।।(ऋ0 10/108/2)

सरमा का कथन– हे पणियो! इन्द्र के द्वारा भेजी गयी में उसकी दूती हूँ तुम लोगों के प्रभूत धन की इच्छा करती हुई घूम रही हूँ मेरे कूदने के भय से उस रसा के जल ने मेरी सहायता की। इस प्रकार रसा के जल को मेने पार किया ।

3. कीदृडिन्द्रः सरसे वा दशीकाश्यस्येदं दूतीरसरः पराकात् ।
आ च गच्छान्मित्रमेना दधामाथा गवां गोपतिर्नो भवाति ।।(ऋ0 10/108/3)

पणि का कथन – हे सरमा! इन्द्र कैसा है उसकी द्रश्टि कैसी है? जिसकी दूती (तुम) दूर से यहाँ आई हो । अगर वह आये तो हम उसे मित्र वनायेगे । जव वह हमारी गायों का सरंक्षक (गोपति) होगा ।

4. नाहं तं वेद दभ्यं दभत्स, यस्येदं दूतीरसरं पराकात् ।
न तं गूहन्ति स्रवतो गभीरा, हता इन्द्रेण पणयः भायध्वे ।। (ऋ010/108/4)

सरमा कथन – सरमा ने कहा में उसको कश्ट पहुँचाने वाला नहीं समझती हूँ अपितु वह (शस्त्रुओं को) कश्ट देता है । जिसकी में दूती वनकर बहुत दूर से यहाँ आई हूँ वहती हुई गहरे जल वाली नदियाँ उसको छिपा नहीं सकती । हे पणियो! इन्द्र द्वारा मारे जाने पर तुम लोग पृथ्वी पर पड़े रह जाओगे ।

5. इमां गावः सरमे या ऐच्छः पारि दिवो अन्तान्सुभगे पतन्ती ।
कस्त एना अव सृजादयुध्वयुतास्माकमायुधा सन्ति तिग्मा ।। (ऋ0 10/108/5)

पणियों का कथन – पणियों ने कहा हे सरमा ! आका ा की छोर तक चारो तरफ घूमती हुई इन गायों को युद्ध के विना कौन मुक्त करा सकता है । हमारे आयुध भी तो तीक्ष्ण हैं । इस प्रकार भात्रु लोग दूत को अपनी भाक्ति से भयभीत करना चाहते हैं । इस विशय मे महाभारत काल में पाण्डवों के दूत वनकर गये हुए श्रीकृष्ण को दुर्योधन द्वारा कहा गया यह वाक्य स्मरण रखना चाहिए – सूच्यग्रं नैव दास्यामि विना युद्धेन के ाव ।

6. असेन्या वःपणयो वचांस्यनिशव्यास्तन्वः सन्तु पापीः ।
अधृश्टो व एतवा अस्तु पन्था बृहस्पतिर्व उभया न मृलात् ।। (ऋ0 10/108/6)

सरमा का कथन – हे पणियों ! तुम्हारे वचन भास्त्र के आघात से सुरक्षित हैं ।तथा पापी भारीर वाणों के निशान से वचने वाले हो सकते हैं । तुम्हारे पास पहुँचने के लिए मार्ग भी अगम्य हो सकता किन्तु किसी भी प्रकार से वृहस्पति दया नहीं करेंगे।

7. अयं निधिः सरमे अद्रिबुध्नो, गोभिरश्वेभिर्वसुभिरन्यृश्टः ।
रक्षन्ति तं पणयो ये सुगोपा, रेकु पदमलकमा जगन्थ ।। (ऋ0 10/108/7)

पणियों का कथन – हे सरमा ! गायों, अश्वों तथा रत्नों से भरा हुआ यह खजाना पर्वतों से ढका हुआ है । कुशल रक्षक पणि, इसकी रक्षा करते हैं । तुम व्यर्थ में इस खाली स्थान पर आयी हो ।

8. एह गमन्नृशयः सोमशिता, अयास्यो अबिरसो, नवग्वाः।
त एतमूर्वं वि भजन्त गोना, मथैतद्वचः पणयो वमन्नित्।। (ऋ0 10/108/8)

सरमा का कथन – सरमा ने कहा सोमपान से उत्तेजित, अयास्य, अबिरस,नवग्वा आदि ऋशि यहॉ पर आयेगें । वे गायों के इस विशाल समूह को बॉट लेगें । तब पणियों को अपने इस वचन को उगलना पड़ेगा ।

9–एवा च त्वं सरम आजगन्थ प्रबाधिता सहसा दैव्येन ।
स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा अप ते गवां सुभगे भजाम ।। (ऋ0 10/108/9)

पणियों का कथन–पणियों ने कहा – हे सरमा ! इस प्रकार यदि तुम देवताओं की भाक्ति से पीडित की गई हो तो हम तुम्हें बहन मानते हैं । फिर मत जाओ । हे सोभाग्यवती ! हम तुम्हें गायों का अलग हिस्सा देगें ।

10–नाहं वेद भ्रातृत्व ंनो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरबिरस च घोराः।।
गोकामा मे अच्छदयन्यदायमपात इत पणयो वरीयः।। (ऋ0 10/108/10)

सरमा का कथन – सरमा ने कहा कि में पणियों के इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करती वह कहती है कि इन्द्र = राजा तथा उसके घोर प्रचण्ड सैनिक ही इस विशय में कोई निर्णय ले सकते हैं । इन्द्र ने सरमा को गौवों के अन्वेशणार्थ भेजा है । वह इसी पर दृढ रहना चाहती है । उत्तम दूत का यह लक्षण है ।

11–दूरमित पणयोवरीय उदगावो यन्तु मिनती ॠतेन ।
बृहस्पतिर्या अविन्दन्निगूलहाः सोमो ग्रावाणः ऋशय चविप्रा।। (ऋ0 10/108/11)

सरमा कथन – अन्तिम रूप में सरमा पणियों को चेतावनी देती हुई कहती है । कि तुम्हारा भला उसी में है कि तुम यहॉ से चले जाओ और अन्त में अत्यन्त आ वस्त रूप में सरमा कहती है कि अब तुम निि चत समझो कि बृहस्पति ने, सोम ने, ऋशिओं, ने विप्रो ने, गौओं को प्राप्त कर ही लिया है । यह उसी प्रकार की चेतावनी है । जैसी कि हनुमान् जी ने अन्तिम रूप में रावण को दी थी कि श्रीराम आयेंगे और लंका को जीत कर सीता जी को ले जायेंगे ऐसा तुम निि चत समझो ।

सरमा का अर्थ – सरमा की व्युत्पत्ति गमनार्थक सृ धातु से है [11]। सरणा = गमन करने के कारण ही इसे सरमा कहा जाता है । यह देवशुनी भी है । भुानी भाब्द टुओश्विगति वृद्धयोः (भ्वादि) धातु से निश्पन्न है जिसका अर्थ गति करने वाली भी है । भारतवर्श के अनेक धनाढ़य लोगों का पैसा स्विसबैंक में जमा है जिनमें राजनीतिज्ञ भी सम्मिलित हैं । यही वर्ग पणि कहलाता है । इसके अतिरिक्त 'सरमा' भाब्द का पाठ निघण्टु तथा निरुक्त में तथा अन्तरिक्ष स्थानी देवताओं में किया गया है [12]।
स्कन्दस्वामी ने आख्यान पक्ष को भी प्रस्तुत किया है । तथा साथ ही आधिदैविक पक्ष में सरमा को माध्यमिक वाक माना है [13]। आख्यान पक्ष इश्ट न होने के कारण दुर्गाचार्य ने–''वाग वै सरमा'' (मै0 सं 4/6/2) इस वचन को भी उद्धृत किया है ।इस प्रकार सरमा के विशय में विद्वानों ने अनेक भिन्न – भिन्न अर्थ किये हैं ।

1. चन्द्रमणि विद्यालंकार ने अपने निरुक्त – भाश्य में सरमा का अर्थ देववाणी करते हुए लिखा है कि ''यह सदा देव लोगों के पास ही रहती है । अतः यह ''देव ाुनी'' है ।
2. जयदेव विद्यालंकार ने अपने ऋग्वेदभाश्य में इस सूक्त का आध्यात्मिक अर्थ किया है। सरमा का अर्थ आत्मिक चेतना, चित्तवृत्ति, विवेक वुद्धि तथा पणि का अर्थ इन्द्रियॉ प्राण तथा स्तुति योग्य उत्तम व्यवहार है । यह अर्थ किया है ।

आधिदैविक पक्ष में सरमा का अर्थ – आकाश में फैलने वाली विद्युत ध्वनि तथा पणि का अर्थ मेघमाला होगा ।

1. आचार्य यास्क ने ऋग्वेद 1/32/11 में पणि का अर्थ व्यवहार कुशल वणिक् किया है ।
2. वाल्मीकि रामायण में वैदिक सरमा पणि आख्यान उल्लिखित नहीं है ।
3. महाभारत में ऋग्वेदिक आख्यान तो नहीं हैं किन्तु तीन स्थानों पर सरमा की चर्चा महाभारत में अवश्य है
4. ब्राह्मण्ड पुराण 3/6/3/2 में सरमा को क यप तथा क्रोधा की कन्या माना है ।
5. महर्शि दयानन्द ने ऋ0 1/62/3 के भाश्य में सरमा का अर्थ विद्या, धर्मादिबोधों को उत्पन्न करने वाली माता किया है ।

आचार्य भौनक ने सरमा पणि के विशय में कथा को इस प्रकार लिखा है– पणि नाम के असुर रसा नदीं के उस पार रहते थे जिन्होंने इन्द्र की गौवों को चुरा कर छिपा दिया था । बृहस्पति ने उन्हें देख लिया और तब इन्द्र को सूचित किया इन्द्र ने गौओं की खोज में पाणियों के पास सरमा को दूती के रूप में भेजा उसने पणियों के साथ वार्तालाप किया तब पणियों ने उसे प्रलोभन दिया कि तुम हमारी बहन बनकर यहीं रहो किन्तु हमारा अहित मत करो। हम तुम्हारा भाग देगें । सरमा ने उन गौवो का दूध पीना चाहा, दूध पीकर सरमा भात योजन विस्तार वाली रसा नदी को पार कर गयी इन्द्र ने पूछा कि तुमने गौओं को देखा या नहीं । सरमा ने नकारात्मक उत्तर दिया तो इन्द्र ने क्रुद्ध होकर लात मारी जिससे उसके मुख से दूध निकलने लगा । तब वह भयभीत होकर पणियों के पास पहुॅच गयी । इन्द्र भी प्रथ्वी पर गिरे दूध का अनुसरण करते–करते पणियों के पास जा पहॅुचा तब गायों को मुक्त किया । आधुनिक विद्वानों में डा0 रामनाथ वेदालंकार के अनुसार अध्यात्म पक्ष में आत्मा इन्द्र है तथा गौवें आत्मिक प्रकाश की किरणें है । आत्मा इन किरणों से भारीर की सब क्रियाओं को प्रकाशित करना चाहता है । किन्तु असद् विचार रूपीपणि अन्तःकरण की इन प्रकाशकिरणों को पकड़कर गुफा में बन्द कर देते हैं । तब आत्मा अपनी दिव्य वाणी रूपी सरमा को दूती बनाकर उनके पास भेजती है इन असद् विचारों तथा आत्मलोक में बड़ा अन्तर है यही बीच की विस्तीर्ण नदी है । जिसे पार कर वह असद् विचारों के पास पहॅुचती है [14]।

आधिदैविक पक्ष में – इन्द्र को सूर्य,गौवों को किरणें तथा पणियों को रात्रि का अन्धकार माना जा सकता है । इसी प्रकार ग्रिफिथ ने भी ऋ0 1/72/3 की टिप्पणी में पणियों को रात्रि का अन्धकार तथा सरमा को सूर्य किरण माना है ।

ग – पुरुरवा–उर्वशी संवाद–

पुरुरवा उर्व ाी संवाद का विवरण ऋ0 10/95 में निवद्य है ऋ0 के सूक्त में 18 मन्त्र हैं जिनमें से 1,3,6,8,10,12,14 तथा 17 मन्त्रों का देवता उर्वशी तथा ऋशि पुरुरवा है। जवकि मन्त्र 3,4,7,11,13,15,16,18 मन्त्रों का देवता पुरुरवा तथा ऋशि उर्व ाी है । पुरुरवा उर्व ाी संवाद का प्रतिपादन ऋग्वेद सूक्त के अतिरिक्त संहिता ग्रन्थ, काठक संहिता 8/10 में भी निवद्व है ।
भातपथकार ने ऋग्वेद के सूक्त में अपनी कल्पनाओं का मिश्रण करके विस्तृत रूप में इसे प्रस्तुत किया हैं भातपथकार ने इस सूक्त के आधार पर यह आख्यान प्रस्तुत किया है । कि स्वर्ण की अप्सरा उर्वशी कुछ समय तक पुरूरवा राजा के समीप पत्नी रूप में रहने को आयी उसने भार्त रखी कि वह कभी भी पुरुरवा को नग्न रूप में न देखे ऐसा होने पर वह उसे छोड़कर चली जायेगी एक वार उर्व ाी की चारपाई के समीप बॅधे हुए मेमने को गन्धर्व चुरा कर ले जाने लगे तो पुरूरवा उसे बचाने के लिए भीघ्रता में नंगा ही दौड़ पड़ा जिसे उर्वशी ने देख लिया इस कारण वह पुरुरवा को छोड़कर चली गयी पुरुरवा विलाप करता हुआ कुरुक्षेत्र में घूमता रहा । वहॉ

उसने तालाब में बत्तखों को देखा उर्वशी भी उसी रूप में थी । पुरूरवा को देखकर वह प्रकट हो गयी [14] तथा दोनों का संवाद ही इस सूक्त में वर्णित हैं । स्त्री और पुरूश के मध्य चलने वाले संवाद का प्रतिनिधित्व पुरुरवा उर्वशी संवाद के नाम से अभिहित है।

1. **पुरुरवा का कथन** – पुरुरवा ने उर्व ाी से कहा कि तुम पुनः मेरे पास आओ परन्तु उस उवर्शी ने दुःख के साथ उत्तर दिया

2. **उर्वशी का कथन** – उर्वशी ने राजा से कहा अव में तुम्हारे लिए अप्राप्य हूँ । अव तुम मुझे पुनः स्वर्ग में प्राप्त करोगे [15]।

3. **पुरुरवा का कथन** – पुरुरवा ने उर्वशी से कहा हे निर्दय नारी !तुम अपने मन को अनुरागी बनाओ हम भाीघ्र ही परस्पर वार्तालाप करें । यदि हम इस समय मौन रहेंगे तो आने वाले दिनों में सुखी नहीं होगे [16]।

4. **उर्वशी कथन–** उर्वशी ने उत्तर दिया हे पुरुरवा! वार्तालाप से कोई लाभ नहीं में वायु के समान ही दुश्प्राप्य नारी हूँ उशा के समान तुम्हारे पास आई हूँ तुम अपने घर को लौट जाओ [17]।

5. **पुरुरवा का कथन** – पुरुरवा ने कहा हे उर्वशी! में तुम्हारे वियोग में इतना सन्तप्त हूँ कि अपने तूणीर से वाण निकालने में भी असमर्थ हो रहा हूँ । इस कारण में युद्ध जीतकर असीमित गायों को नहीं ला सकता अतः मैं और मेरे सैनिक भी कार्यहीन हो गये हैं [18]।

आचार्य सायण कहते हैं।
त्रिःस्म माह्नःभनथयो वैतसेनोत स्म मेऽव्यत्यै पृणासि ।
पुरुरवोऽनु ते केतमायं राजा मे वीर तन्वस्तदासीः [19]।।

उक्त मन्त्र में संवोधन करती हुई उर्वशी कहती है । हे पुरुरवाः तुम मुझे दिन में वैतस (पुरुशलिंग) से तीन वार ताड़ित करते थे और तुम मुझ अकेली के साथ भोग करते थे इसलिए हे पुरूरवा मैं तुम्हारे घर आयी थी पुराने दिनों को स्मरण करती हुई वह कहती है कि तुम उस समय मेरे भारीर के राजा थे ।
आचार्य दुर्ग भी उक्त कथन का स्मरण करते हुए कहते हैं– हे पुरुरवा दिन में तीन वारशिनदण्ड (लिब) से पहले प्रहार करते थे । और मेरे मन की अभिलाशा को पूर्ण करते थे । मैं चित्त से तुम्हारे अनुकूल थी इस कारण तुम मेरे भारीर के राजा थे । परन्तु अब तुम वैसे नहीं हो इसीलिए मै तुम्हारे साथ मेल नहीं करूँगी ।

1. **वर्तालाप के क्रम में आगे उर्वशी ने कहा** – हे पुरुरवा ! आपने प्रथ्वी की रक्षा के लिए पुत्र उत्पन्न किया है । मैं तुमसे अनेक वार कह चुकी हूँ कि मैं आपके पास नहीं रहूँगी । तुम इस समय प्रजा पालन के कार्य से विमुख होकर व्यर्थ वार्तालाप क्यों करते हो [20]।।

2. **पुरुरवा कथन** – पुरुरवा ने कहा – हे उर्व ाी तुम्हारा पुत्र मेरे पास किस प्रकार रहेगा? वह मेरे पास आकर रोयेगा । पारस्परिक प्रेम के वंधन को कौन सदग्रहस्थ तोड़ना स्वीकार करेगा तुम्हारेश्वशुर के घर में श्रेश्ठ आलोक जगमगा उठा है [21]।

3. **उर्वशी कथन** – उर्वशी ने कहा हे पुरुरवा मेरा उत्तर सुनो मेरा पुत्र तुम्हारे पास आकर नहीं रोयेगा । मैं सदैव उसकी मंगल कामना करूँगी । तुम अब मुझे नहीं पा सकोगे । अतः अपने घर को लौट जाओ मैं तुम्हारे पुत्र को तुम्हारे पास भेज दूँगी [22]।

4. **पुरुरवा कथन–** हे उर्वशी ! मै तुम्हारा पति आज पृथ्वी पर गिर पडा हूँ मै फिर कभी नहीं उठ सकूँगा दुर्गति के वन्धन में फॅसकर मृत्यु को पाप्त होऊॅगा वृक (भेडिया) आदि मेरे भारीर का भक्षण करेंगे [23]।

5. **उर्वशी कथन–** हे पुरुरवा ! तुम गिरो मत । तुम अपनी मृत्यु की इच्छा मत करो तुम्हारे भारीर को वृक आदि भक्षण न करें । स्त्रियों का और वृको का हृदय एक समान होता है । उनकी मित्रता कभी स्थायी नहीं रहती [24]।

6. **पुरुरवा कथन** – उर्वशी जल को प्रकट करने वाली तथा अन्तरिक्ष को पूर्ण करने वाली है वशिश्ठ ही उसे अपने वश में कर सके हैं । तुम्हारे पास उत्तमकर्मा मै रहूँ। हे उर्वशी ! मेरा हृदय जल रहा है अतः लौट आओ [25] ।

7. **उर्वशी कथन** – हे पुरुरवा ! सभी देवताओं का कथन है कि तुम मृत्यु को जीतने वाले होवोगे और हव्य द्वारा देव यज्ञ करोगे । फिर स्वर्ग सानन्द रहोग [26]।

उपर्युक्त नाम प्रातः काल का और पुरुरवा नाम सूर्य्य का है ।

पुरुरवा – उर्वशी संवाद का प्रतिपाद्य – इस सूक्त के माध्यम से गृहस्थ धर्म तथा राजनीति की चर्चा की गई है । पुरुरवा का अर्थ मेघ तथा उर्वशी तथा विद्युत अर्थ भी निरुक्त के आधार पर कुछ व्याख्याकारों ने किया है । किन्तु किसी ने भी पूरे सूक्त की व्याख्या मेघ तथा विद्युत परक नहीं की पति पत्नी तथा राजनीति का वर्णन इसमें प्रमुखता से है । तथा 16 – 18 मन्त्रों में विद्युत तथा मेघ का वर्णन भी है । वेद में अन्यत्र भी यह भौली दृश्टिगोचर होती है । कि मन्त्रों में वर्णित किसी भाब्द के यदि अनेक अर्थ हैं तो उनमें से कुछ मन्त्रों की व्याख्या भाब्द के किसी एक अर्थ के पक्ष में होगी भोश मन्त्रों की व्याख्या अन्य अर्थ में ही हो सकती है ।

यथा – ऋग्वेद के प्रथम अग्नि सूक्त को ही लें । इसमें 9 मन्त्र हैं सूक्त के प्रारम्भिक मन्त्रों की व्याख्या त्रिविध रूप में की जा सकती हैं । किन्तु अन्तिम मन्त्र, पाँच की व्याख्या केवल परमे वर परक आध्यात्मिक पक्ष में ही होगी इसका कारण यह है कि हम मन्त्र में अग्नि को समस्त कार्यो का जानने वाला कहकर उससे कुटिल पाप के निवारण की प्रार्थना की गयी है । यह कार्य परमे वरश्रूपी अग्नि ही कर सकता है । भौतिक अग्नि नहीं क्योंकि परमे वर ही सर्वज्ञ तथा दुरितों पापों को दूर करने वाला है । इसी प्रकार पुरूरवा – उर्वशी सूक्त के अन्तिम तीन मन्त्रों की व्याख्या मेघ तथा विद्युत पक्ष में तथा भोश मन्त्रों की व्याख्या अन्यपक्ष में अपेक्षित है । इस सूक्त में निम्न बातों का प्रतिपादन किया गया है ।

1. पति – पत्नी को तथा राजा – राजसभा एवं प्रजा को परस्पर अपनी गुप्त मन्त्रणा करते रहने चाहिए ।
2. पत्नी को घर में उशा के समान सवसे पूर्व प्रवुद्ध होकर ग्रहकार्यो में लग जाना चाहिए तथा वायु के समान गतिमान रहे ।
3. पत्नी के बिना पति तथा राजसभा के बिना राजा निस्तेज होते है ।
4. पत्नी का कर्त्तव्य है कि वह पति तथा अन्य घर वालों के लिए वास, भोजन आदि का समुचित प्रबन्ध करे, साथ ही पति उसकी समस्त कामनाओं को पूर्ण करें। उसे सन्तान प्राप्त भी कराए तथा कामसन्तुश्टि भी प्रदान करें ।
5. राजा को प्रजा पोशक तथा दुश्टों का हननकर्ताः होना चाहिए।
6. राजा को अपने कार्यो तथा वचनों के द्वारा प्रजा से सम्पर्क वनाये रखना चाहिए।
7. प्रजा के हितकारी कर्मशील जन को ही राजा बनाना चाहिए।

इस प्रकार सूक्त की आधिदैविक तथा आधिभौतिक व्याख्याओं से सुस्पश्ट होता है । कि सूक्त के प्रमुख पात्र पुरुरवा तथा उर्वशी हैं

सन्दर्भ

1. निरुक्त 2/24
2. वृ0 4/105/106 ऋग्विधान लोक 177, सर्वानुक्रमणी 3/33/1 का सायण तथा वेंइटमाधव भाश्य
3. इन्द्रो अस्मॉ अरदद् वज्रबाहुरपाहन्वृंत्र परिधि नदीनाम् ।देवोऽनयत् सविता सुपाणिस्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः ।। ऋ0 3/33/6
4. अथ यः स इन्द्रोऽसौ स आदित्य। भात0 8/5/2
5. पिजवनः पुनः स्पर्धनीयजवो वा मिश्री भावगतिर्वा । (नि0 2/24)
6. ऋतम् निघ0 1/12 में जलवाली है । ऋतमित्युदकनाम (नि02/24)
7. अवस्यूरहे कु ाकस्य सूनुः । तत्र भवान्
8. वि वामित्रस्तपस्तेपे नानृशिः स्यामिति । तत्र भवान् ऋशिः सम्पन्नः स पुनस्तपस्तेपे जानशेः पुत्र स्यामिति । तत्र भवान् गाधिरपि ऋशिः सम्पनः । स पुनस्तपस्तेपे नानशेः पौत्रः पौत्रः स्यामिति । तत्र भवान् कु ाकोऽपि ऋशिः सम्पन्न । (म0 भा0 4/1/104)
9. यद्ध ऊर्मिः भाम्या हन्त्वाये योक्त्राणि प्रमु०चत ।
10. देव ुनीन्द्रेण्सा प्रहिता पणिभिरसुरैः समूद इत्याख्यानम् नि0 11/25
11. सरमा, सृगतौ, औणादिकोऽम प्रत्ययः । 33/59 महा0 भा0
12. निघ0 5/5 तथा निघ0 11/25
13. एवमियमाख्यानपक्षे योजना । यदा तु माध्यमिका वोक् सरमातदैवत् । अनावृश्टया पीडितो नदन्त स्तनयित्नुमुपश्रुत्य सासूयं मन्त्रदृगाह किमिच्छन्ति सरमा मध्यमस्थाना वाक् । (नि011/25 स्कन्द भाश्य)
14. चरन् सरसि सोऽप्यद भिरुपामिवोर्व ाीम् । सखीभिर भिरूपाभिः प०चभिः पार्श्वतो वृताम् ।। ऋक0 10/95/151 (वृहवदेवता)
15. तामाह पुनरेहीति दुःखात्सा त्वब्रवीन्नृपम् । अप्राप्याहं त्वयाद्येहस्वर्गे प्राप्स्यसि मां पुनः ऋ0 10/95/152 (वृहददेवता)
16. हये जाये मनसा तिश्ठ धोरे वचांसि मिश्र कृण वाव है नु । न नौ मन्त्रा अनुदितास एते मयस्करन् परतरे चनाहन् ।। (ऋ0 10/95/1)
17. किमेता वाचा कृणवा तवाहं प्राक्रमिशमुश सामग्रियेव । पुरुरवः पुनरस्तं परेहि दुरापना वातइवाहमस्मि ।। (ऋ0 10/95/2)
18. इशुर्न श्रिय इशुधेरसना गोशाः भातसा न रंहि । अवीरे क्रतौ वि दविद्युतन्नोरा न मायु चितयन्त धुनयः ।। (ऋ0 10/95/3)
19. ऋ0 10/95/5
20. जज्ञिश इत्था गोपीथ्याय हि दधाथ तत्पुरूरवो म ओजः । आशासं त्वा विदुशी सस्मिन्नहन्नम आश्रृणोः किमथुग्वदासि ।।(ऋ0 10/95/11)
21. कदा सूनुः पितरं जात इच्छाच्चक्रन्नाश्रु वर्तयद्विजानन् । को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेशु दीदयत् ।।(ऋ0 10/95/12)
22. प्रति ब्रवाणि वर्तयते अश्रु चक्रन्न क्रन्ददाध्वे शिवायै । प्र तत्ते हिनवा यत्ते अस्मे चरेह्मस्तं नाहि मूर मापः ।। (ऋ0 10/95/13)
23. सुदेवो अद्य प्रपतेदनावृत्परावतं परमां गन्तवा उ । अधा भायीत निर्ऋतेरुपस्थेऽधैन वृका रथसासो अद्युः ।। (ऋ0 10/95/14)
24. पुरुरवो मा मृथा मा प्र पप्तो मा त्वा वृकासो अशिवास उ क्षन । न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति सालावृकाणां हृदयान्येता (ऋ0 10/95/15)
25. अन्तरिक्षप्रां रजसो विमानीमुप शिक्षाम्युर्वशी वशिश्ठः । उपत्वा रातिः सुकृतस्‍ तिश्ठान्नि वर्तस्व हृदयं तप्यते में ।। (ऋ0 10/95/16) इति त्वा देवा इम आहुरैल यथेमेतद् भवसि मृत्युबन्धुः ।।
26. प्रजा ते देवान् हविशा यजाति स्वर्ग उ त्वमपि मादयासे ।।(ऋ0 10/95/17)
27. अश्टाध्यायी, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु,रामलालकपूर ट्रस्ट सोनीपत, हरियाणा,1977ई
28. अथर्ववेद संहिता क्षेमकरणदास त्रिवेदीकृत, दयानन्द संस्थान करोलवाग,2031 वि0स0,(नई – दिल्ली)
29. आचार्यसायणऔरस्वामी, डॉ रामप्रकाशवर्णी, परिमलपिब्लकेशन्स,27/28,2008ई0,दयानन्द की ऋग्वेदादि भाश्य भूमिकाएँ
30. आपस्तम्ब गृह्यसूत्र,हरदत्त मिश्र,अनाकुला टीला चौखम्बा संस्कृत,1928 ई0,सीरीज वाराणसी
31. आर्शज्योति,डा0 रामनाथ वेदालंकार,श्रीघूड़मल प्रहलादकुमार आर्श,2008 ई0 धर्मार्थन्यास वनियापाडा हिण्डौनसिटी
32. उणादिकोशः (पंचपादी),व्या0 स्वामी दयानन्द सरस्वती,वैदिकयन्त्रालय अजमेर,2033 वि0 सं0(राजस्थान)
33. उणादिकोशः (दशपादी),सं0पं0 युधिश्ठिर मीमांसक,रा0ला0क0 ट्रस्ट,1942 ई0 सेनीपत(हरयाणा)
34. ऐतरेय – ब्राह्मण सुखदावृत्ति,अनन्तकृश्ण भाास्त्री,त्रिवेन्द्रम,1931 ई0
35. ऋक्प्रातिशाख्यम् उवट,सं0 मंगलदेव भाास्त्री,चौखम्बा संस्कृत सीरीज,1953 ई0,भाश्यम वाराणसी
36. ऋक्सर्वानुक्रमणी कात्यायन,सं0 डॉ0विजयपाल विद्यावारिधि, रामलालकपूरट्रस्टवहालगढ़,1985 ई0 सेनीपत,(हरयाणा)
37. ऋग्वेद,महर्शि दयानन्द सरस्वती कृत भाश्य,सार्वदे ाक आर्य प्रतिनिधिसभा 1972 ई0 रामलीला – मैदान दिल्ली
38. ऋग्वेदादिश्भाश्य भूमिका,स्वामी दयानन्द,रामलाल कपूर ट्रस्ट,2010 ई0,सोनीपत (हरयाणा)
39. ऋग्वेदादि भाश्य भूमिका,सायण सं0 डॉ वीरेन्द्र कुमार वर्मा,चौखम्वा प्रकाशन वाराणसी 2007 ई0
40. ऋग्वेद मणिमण्डलसूक्त,स्वामी समर्यणानन्द,समर्पण भाोध संस्थान साहिवावाद,2035 वि0सं0
41. काशिका – वामन जयादित्य,सं0 सोभित मिश्र,चौखम्बा संस्कृत पुस्तकालय वनारस,1952 ई0
42. गुरूकुल पत्रिका,गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार
43. तैत्तिरीय संहिता,आनन्दाश्रम,पूना संस्करण,2001 ई0
44. तैत्तिरीयोपनिशद,वासुदेव भार्मा पण ाीकर,चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी,1991 ई0
45. तैत्तिरीय आरण्यक,आनन्दाश्रम संस्करण,पूना,2001 ई0
46. धातुपाठ,पाणिनि,रामलाल कपूर ट्रस्ट सोनीपत हरयाणा 1977 ई0
47. नाटयशास्त्रम्,भरत मुनि,चौखम्बा प्रकाशन वाराणसी,1977 ई0
48. निघण्टु, यास्क,वैदिक यन्त्रालय,1957 ई0 अजमेर राजस्थान
49. निरुक्त,आचार्य यास्क,वैदिक यन्त्रालय अजमेर,1957 ई0
50. निरुक्त स्कन्दभाश्यम्,सं0 प्रो0 ज्ञानप्रकाश भाास्त्री,परिमाण पब्लिकेशन्स 27/28,2009 ई0 भाक्तिनगर दिल्ली
51. निरुक्तालोचन ,पं0 सत्यव्रत सामश्रमी,कलकत्ता
52. निरुक्त मीमांसा,पं0 शिवनारायण भाास्त्री,श्रीरामे वर सिंह इन्डोलॉजिकल 2026 वि0स0 वुक हाउस वाराणसी
53. पाणिनीयशिक्षा, चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी
54. प्राचीन भारत का इतिहास,पं0 भगवद् दत्त,लाहौर संस्करण,1940 ई0
55. बृहददेवता, आचार्य भाौनक सं0 –1940 ई0,ए0 ए0 मैक्डोनल
56. महाभाश्यम, पंतजलि, हरियाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर, 1975 ई0
57. मनुस्मृति मनु, कुल्लक भट्टीय टीका,प्राणजीवन भार्मा,बम्वई,1913 ई0
58. यजुर्वेदः,स्वा0दयानन्द भाश्य,आर्य साहित्य मण्डल लिमिटेड अजमेर,2016 वि0 सं0

59. यजुर्वेद भाश्य विवरण,पं0 ब्रह्मदत्त जिज्ञासु,रामलाल कपूर ट्रस्ट गुरवाजार अमृतसर 1956 ई0
60. वाजसनेयी प्रातिशाख्यम्,कात्यायन,उवटभाश्य वैकंटराम भार्मा मद्रास,1934 ई0
61. वेदवाणी – मासिक पत्रिका,सं0 आचार्य सुरेन्द्र,रामलाल कपूर ट्रस्ट रेवली जिला,2010 ई0 सोनीपत (राजस्थान)
62. वेदान्त दर्शन,व्यासर्शि, सं0 विन्ध्ये वरी,चौखम्बा संस्कृत सीरीज – वाराणसी,1992 ई0,प्रसाद द्विवेदी,
63. वेदों का यथार्थ स्वरूप,पं0 धर्मदेव विद्यामार्तण्ड,समर्पण भाोध संस्थान राजेन्द्र नगर,52 वि0 सं0,साहिवावाद
64. वेदों की वर्णन भौलियाँ,डॉ रामनाथ वेदालंकार,श्रद्धानन्द भाोधसंस्थान गु0 कागड़ी,1976 ई0
65. वैदिक कोश,पं0 हंसराज,राश्ट्रिय संस्कृत संस्थान,2001 ई0,जनकपुरी (दिल्ली)
66. वैदिक वाङमय का इतिहास,पं0 भगवद्दत्त,प्रवण प्रकाशन 1/8 पंजावीवाग नई–दिल्ली 1978 ई0
67. वैदिकइतिहास निर्णय, पं0 शिवशंकर भार्मा काव्यतीर्थ,वैदिकपुस्तकालय सी0 के0 61/61,1950ई0 कर्णघण्टा वाराणसी
68. वैदिक इतिहास विमर्श, आचार्य वैद्यनाथ भाास्त्री, आर्य साहित्य मण्डल लिमटेड अजमेर 1961 ई0
69. वैदिक इतिहास विमर्श, डॉ0 रघुवीर वेदालंकार,प्राच्य विद्याप्रतिश्ठान बी0 266 2005 ई0 सरस्वतीविहार दिल्ली
70. वैदिक माइयोलॉजी, ए0 ए0 मैक्डोनल, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी,1984 ई0
71. वैदिक सिद्धान्त मीमांसा,पं0 म0 युधिश्ठिर मीमांसक,रा0 ला0 क0 ट्रस्ट सोनीपत (हरयाणा)
72. भातपथ ब्राह्मण,सायणाचार्य,'नाागप्रकाशन' – (दिल्ली),1990 ई0
73. सामवेद संहिता,वैदिक यंन्त्रालय – अजमेर 2065 वि0सं0,(राजस्थान)
74. सत्यार्थप्रकाश, स्वामीदयानन्द सरस्वती,वैदिक यन्त्रालय – अजमेर, 2065 वि0स0,(राजस्थान)।